दुर्गा शतक

रचयिता

आद्या प्रसाद पाण्डेय "द्विजेन्दु" साहित्य-रत्न

नगर पचायत हरिहरपुर, जनपद - सत कबीर नगर

पुस्तक मिलने का पता

आद्या साहित्य कुटीर,

नगर पचायत हरिहरपुर, जनपद सत कबीर नगर (उ०प्र)

श्री शुभ सवत् 2057 के शारदीय

नवरात्र की नवमी शुक्रवार को प्रकाशित

प्रकाशक

आद्या साहित्य कुटीर,

नगर पचायत हरिहरपुर, जनपद - सत कबीर नगर

प्रथम सस्करण 2000 मूल्य 21 रुपया

"वन्दना"

ऑजि ज्ञान अजन विराजि उर अतर मै,
मद सी परी है बन्द पलक उघारि दै,
एक-एक सुर सो नवीन बीन तारन के,
सोई चेतना को चारु चित मे सँभारि दै,
डारि दै सुमन्त्र बानी-बानी के बसीकर को,
स्वबस बनाके विश्व बिरुद पसारि दै,
हेरत "द्विजेन्दु" पथ तेरो सुत निरालम्ब,
कोर से कृपा की अम्ब! नैसुक निहारि दै ॥

कवि परिचय . .

कविवर श्री आद्या प्रसाद पाण्डय "द्विजन्दु" जी, का जन्म श्रावण शुक्ल स० १९७४ वि० सन् 15 जुलाई उन्नीस सा सत्तरह मे हरिहरपुर मे हुआ। आप क पिता वद्यभूषण श्री प० भागवत प्रसाद पाण्डेय कुशल ओर अनुभवी वैद्य थे। आप की माता स्वर्गीया श्रीमती अनन्ता देवी एक कुशल गृहिणी के रूप मे इस परिवार को मिली थी, जिनका अभाव आप को आगे बढने मे बढा बाधक सिद्ध हुआ। फिर भी उक्त परिवार का गॉव तथा समाज मे एक उत्कृष्ट स्थान हे।

"द्विजन्दु" जी 'साहित्यरत्न" ही नही बल्कि साहित्यरत्न है, ब्रजभाषा ओर खडी बोली से आपको समान प्रेम है। दोनो भाषाओ मे धारा प्रवाह लिखत हे। प्राचीन शैली के साथ-साथ नवीन शेली की कविता लिखने म भी आपका सफलता प्राप्त हे। उत्कृष्ट गीतकार होन के साथ पुराने छदा मे नय भाव आप नये ढग से रखते है। उच्च भावुक कविया मे आपका एक निश्चित स्थान है। राष्ट्रीय रचनाये अनूठा रग लाती है। पलायन वाद पर भी आप बहुत सुन्दर लिखने है। क्या ही अच्छा होता आप के निम्नलिखित ग्रन्थ शीघ्र प्रकाशन म आ जाते - (1) आदर्श प्रेम (2) अशुमालिका (3) अरूण बेला (4) मीरा।

राम शुभग ओझा

पूर्व विभागाध्यक्ष (सस्कृत)

ही० रा० स्नातकोत्तर महाविद्यालय

खलीलाबाद

सतकबीर नगर

दो शब्द

मात शक्ति का अवहेलना, उपक्षा, तिरस्कार तथा माता बहना क माथ अशिष्ट आचार अत्याचार एव व्याभिचार, कुमारिया के माथ बलात्कार भ्रूण हत्याय, वाल हत्या, गभपात आदि महापापा क भार स पथ्वा कॉप रहा हे, फलम्वरूप एमा अनक दुघटनाय घटित हा रहा ह निनम अनक निर्दोष प्राणा काल क गाल म ममात जा रह ह। कहा भकम्प, कहा नफान ता कहा पथ्वा पाप क भार स धँसती जा रही ह। विनाश लाला का ताण्डव अनवरत हा रहा ह। नारा अपहरण तथा कुछ लाभ क लिए युवतिया का जिन्दा जलाया जा रहा ह। मनुष्य दुदान्त दन्य वनकर नरमहार करन पर तुल गया ह। किमा का चीख-पुकार सुनन वाला कोइ हे हा नहा। अनाचार अत्याचार एव दुराचार स भूलोक तथा दवलाक भा मत्रम्त हा चुक ह। कही काई आधार नहा मिल रहा ह जहाँ प्राणा परित्राण पा मक। आन का देश का अवदशा का दखत हुए महमा उम युग का याद आ जाता ह, जब एक नारा अवतीण हाकर समस्त दुष्कर्मो तथा दुष्कर्मिया का सहार करक दवता मानव तथा ममस्त जाव जन्तुआ का महायिका बनकर एक निर्भीक, कुशल एव परम शान्ति पूण वातावरण का निमाण किया था। उस महाशक्ति सम्पन्न नारा का नाम माँ दुगा क नाम स विख्यात हुआ था। उस माँ न यह वचन दिया था, कि जब-जब साधु, मता, सज्जना एव दवताआ क माग म बाधाये उपस्थित हागी और दानवो का उत्थान हागा तब-तब म पथ्वा पर अवतार्ण हाकर पथ्वा का भार हरण करूँगी, तथा समस्त प्राणिया की रक्षा करूँगी। मुझ माँ के उम मत्य मकल्प का स्मरण हा आया आर मर विचार म आया कि आन दश का घार अवदशा क निवारणाथ उम महाशक्ति स प्राथना करूँ। उसा प्राथना क रूप म ममार क रक्षाथ माँ दुगा म जा विनय निवदन किया, दुगा शतक क नाम स सकलित किया गया हे।

काव्य क क्षत्र म मरी पहुँच नहा क बराबर हे, अत जा त्रुटियाँ हा गई हा उमक लिए म क्षमा का प्रार्थी हूँ। दुर्गा शतक कविता नही ह मर हृदय क उच्छवासा क शब्द समूह ह, जा करुणामयी माँ की कृपा प्राप्ति क लिए विह्वल हृदय स निकल पड।

विनीत

आद्या प्रसाद पाण्डेय (द्विजेन्दु)

दो शब्द

मात शक्ति का अवहेलना, उपक्षा, तिरस्कार तथा माता बहना क माथ अशिष्ट आचाग अत्याचार एव व्याभिचार, कुमारिया के माथ बलात्कार भ्रूण हत्याय, बाल हत्या गभपात आदि महापापा क भार स पथ्वा कॉप रही ह, फलम्वम्प एसा अनक दुघटनाय घटित हा रहा ह निनम अनक निर्दोष प्राणा काल क गाल मे समात जा रह ह। कहा भूकम्प, कहा तूफान ना कहा पथ्वा पाप क भार स धॅसती जा रही ह। विनाश लाला का ताण्डव अनवग्त हा रहा ह। नागी अपहरण नथा कुछ लाभ क लिए युवतिया का जिन्दा जलाया जा रहा हे। मनुष्य दुदान्त दत्य बनकर नग्सहार करन पर तुल गया हे। किसी का चीख पुकार सुनन वाला काइ ह ही नही। अनाचार अत्याचार एव दुगचार स भूलोक तथा दवलोक भा मत्रम्त हा चुक ह। कहा काइ आधार नहा मिल रहा ह, जहॉ प्राणा परित्राण पा मक। आज का दश का अवदशा का दखत हुए सहसा उम युग का याद आ जाता ह, जब एक नारी अवतीण हाकर समस्त दुष्कर्मो तथा दुष्कर्मिया का सहार कग्क दवता मानव तथा ममम्त जाव जन्तुआ की महायिका बनकर एक निर्भीक, कुशल एव परम शान्ति पूण वातावग्ण का निमाण किया था। उम महाशक्ति सम्पन्न नारा का नाम मॉ दुगा क नाम स विख्यात हुआ था। उस मॉ न यह वचन दिया था, कि जब-जब साधु, सता, सज्जना एव दवताआ क माग मे बाधाये उपस्थित हागी और दानवो का उत्थान हागा तब-तब मै पथ्वी पर अवताण हाकर पथ्वा का भार हरण करुँगी, तथा समस्त प्राणिया की रक्षा करुँगी। मुझे मॉ क उम सत्य मकल्प का म्मरण हा आया ओर मर विचार म आया कि आज दश का घार अवदशा क निवाग्णाथ उम महाशक्ति म प्रार्थना करुँ। उसा प्राथना क रूप म मसार क रक्षाथ मॉ दुगा स ना विनय निवदन किया, दुर्गा शतक क नाम स सकलित किया गया ह।

काव्य के क्षेत्र म मेरी पहुॅच नहा क बराबर ह, अत जा त्रुटियॉ हा गई हा उमक लिए म क्षमा का प्रार्थी हूँ। दुर्गा शतक कविता नहा ह मेर हृदय क उच्छवासा क शब्द समूह ह जा करुणामया मॉ की कृपा प्राप्ति क लिए विह्वल हृदय स निकल पड।

विनीत

आद्या प्रसाद पाण्डेय (द्विजेन्दु)

(1)

योग मे प्रयोग मे वियोग मे सयोग मे जो,
ऐसी योग माया को नमन करता हूॅ मै।
दृष्टि मे अदृष्टि मे परोक्ष अपरोक्ष मे भी,
ब्याप्त विश्व छाया को नमन करता हूॅ मै।।
विधि विष्णु शकर समस्त देव ध्यावे जिसे,
ऐसी शक्ति साया को नमन करता हूॅ मै।
कोटि कोटि सूर्य का प्रकाश रोम-रोम जाके,
ऐसी कान्ति काया को नमन करता हूॅ मै।।

(2)

जिसके प्रकाश से प्रकाशित समस्त लोक,
हे हो देव नन्दिनी। नमन करता हूॅ मै।
असुर निकन्दिनी विभजनी सुरो की ब्यथा,
सन्त द्विज बन्दिनी। नमन करता हूॅ मै।।
कन्यका कराल खड्ग धारिणी अनूप रूप,
मृगपति स्यदिनी। नमन करता हूॅ मै।
हरि, हर, विधि भी जिसे न जान पाते, महा,
माया की तरगिनी! नमन करता हूॅ मै।।

(3)

साधना विहीन समाराधना करूँ मै कैसे,
एक भी न पूजा का विधान जानता हूँ मै।
रूप का न ध्यान कर पाता गुन गान नही,
तो भी वरदान हेतु ठान ठानता हूँ मै॥
निपट अजान ज्ञान आगम निगम का नही,
तन्त्र मत्र की न पहचान जानता हूँ मै।
चरण-चरण हित आचरण चारा एक,
सुत मातु नेह ही निदान मानता हूँ मै॥

(4)

चर५।।र्विद के मधुप सब देव जाके,
ऐसे पद पद्म का सहारा चाहता हूँ मै।
जिस रूप रम्यता की समता "द्विजेन्दु" नही,
निर्निमेष नैनो से निहारा चाहता हूँ मै॥
मातृ ममता है जाकी सकल चराचर मे,
मॉ की दिव्य आरती उतारा चाहता हूँ मै।
दूर दुर्गति करि दु ख से विरति देति,
नाम नित दुर्गा का पुकारा चाहता हूँ मै॥

(5)

नाम का न अत है, न अत महिमा का अम्ब!,
तुच्छ मन्द बुद्धि कुछ कैसे कह पाऊँ मै।
अकथ अपार गुन गाथ कह थके वेद,
निगम - पुराण सत कैसे पार पॉऊ मै॥
शिव-विधि-विष्णु लीन ध्यान मे तुम्हारे नित,
विषय-मलीन मन कैसे तुम्हे ध्याऊँ मै।
साधना नही है समाराधना नही है किन्तु,
कामना यही है चरणो मे ठॉव पाऊँ मै॥

(6)

दे दे अशरण को शरण एक बार अम्ब!,
बिगडी हमारी एक बार ही सुधार दे।
सेवा मे चरण की "द्विजेन्दु" को लगा ले अब,
काम क्रोध लोभ मद माया से उबार दे॥
जग के जटिल बन्धनो मे जकडा हूँ यहॉ,
कर ले कृपाण हर बन्धन निवार दे।
लालसा बडी है एक कामना बसी है मन,
बारक ही पुत्र कह हमको पुकार दे॥

(7)

लोक मे सुयश के सुगाथा की न चाह रच,
चाहता नही हूँ विश्व विभव महान दो।
विविध विलास का सुपास भी न चाहूँ कभी,
चाहता न चेतना, विरक्ति गुन ज्ञान दो॥
चाहता हूँ कमल पदो मे अनुरक्ति भक्ति,
सतत उपासना का सरल विधान दो।
भोग भुक्ति के सुयोग की न युक्ति चाहूँ अम्ब!,
चाह एक यम यातना से मुक्ति दान दो॥

(8)

दूषण भी भूषण समान बन जाये यदि,
किंचित कृपा की कोर सुत को निहारो माँ।
क्रूर ग्रह ग्रसित त्रषित भव त्रास से हूँ,
विविध-बिपत्तियों को सपद निवारो माँ॥
बाधा भूत प्रेत की न बाधा बन पाये कभी,
शक्ति की अगाधा निज बिरुद सभारो माँ।
विषय कराल गूढ कटक के जाल पडा,
पल-पल बिकल "द्विजेन्दु" को निकारो माँ॥

(9)

अगम अगाध है तुम्हारी करुणा की निधि,
अपनी दया का एक अंश दान दे दो अम्ब।।
उलझ गया हूँ अब कैसे छूट पाऊँ इस,
जग के प्रपच से, तू रच ज्ञान दे दो अम्ब॥
पाप के समन भव ताप के दमन हेतु,
गान करने को निज गुन गान दे दो अम्ब।।
अबुध अकिचन अशक्त से "द्विजेन्दु" को भी,
दास बना लेने का ही वरदान दे दो अम्ब॥

(10)

दानवों का घोर अनाचार बढ़ता है जब,
होता धरती पै अवतरण तुम्हारा है।
पाते शान्ति शरण अशान्त सत साधु सभी,
मिलता प्रताड़ितों को सबल सहारा है॥
दानवी कुकर्म त्यों अधर्म का विनाश होता,
जग मे सुकर्म का प्रकाश होत न्यारा है।
बन्दनीय पावन परम अभिनन्दनीय,
देव पूजनीय अम्ब चरण तुम्हारा है॥

(11)

श्रृष्टि का विनाश करने को नर दैत्य तुले,
इसको बचाओ शीघ्र रचना तुम्हारी है।
मारे जात सत औ असत हैं दुलारे जात,
जारे जात बालक जलाई जाति नारी है॥
धन-प्राण दोनो का हरण करते हैं दस्यु,
सर्वथा विपन्न हुई जनता विचारी है।
पात गर्भ पात अपघात उतपात अम्ब!,
आओ दानवो से हुई व्याप्त भूमि सारी है॥

(12)

डेरे काल के है अस्त्र - शस्त्र के जखीरे आज,
मठ मसजिदो का रूप अति त्रास कारी है।
धुनि ईश गान की न वेद औ कुरान की है,
बम के धडाके से धरा की दशा न्यारी है॥
पूजा अर्चना का उपहास - ह्रास चारो ओर,
निन्दा नित्य देवियो सुरो की होति भारी है।
धर्म के विरूद्ध युद्ध देश मे है आओ अम्ब !,
अब तो प्रति इच्छा मे प्रतीक्षा तुम्हारी है॥

(13)

घण्टा घडियाल चग शख स्वर मद हुए,
मन्दिरो मे चीख-चीतकार नित्य जारी है।
मेटे जात बरण मिटाये आचरण जात,
चरण-चरण घातको की भीर भारी है॥
छाया अपराध का है अधकार चारो ओर,
जीव के सुरक्षा की उपाय ब्यर्थ सारी है।
दानवी कुकर्म से बचाने हेतु आओ शीघ्र,
अब अवलम्ब अम्ब ! शक्ति ही तुम्हारी है॥

(14)

अबुध बालिकाओ से बलात्कार हो रहे है,
वाहनो से खीच गोलियो से मार देते है।
छूरो का प्रहार कही एक विस्फोट से ही,
तन - धन धाम ग्राम क्षार कर देते है॥
घर से गमन फिर आगमन कठिन होता,
राह मे ही मौत का शिकार कर देते है।
सारा परिवार ही समाप्त करके ये क्रूर,
दु ख का अगम पारावार कर देते है॥

(15)

मातृ महा शक्ति की विडम्बना महान होति,
भक्ति भाव वन्दना का उपहास होता है।
ह्रास हुआ बल का है मन ही उदास किबा,
बम विस्फोट गोलियो से त्रास होता है॥
कुथल सुथल की रही न पहचान अब,
देव मन्दिरो मे भी कुकर्म खास होता है।
भटक रहा है भक्त अटक गई हो कहाँ,
धर्म प्राण देश का सुधर्म नास होता है॥

(16)

जब जब्र दानवो का प्रबल हुआ है बल,
मानव की बात कौन देव शक्ति हारी है।
तब तब संत साधु सज्जनो को सकट से,
अवतरित होके एक नारी ने उबारी है॥
आगम - निगम सुपुराण की जो बात सही,
आज वही काल और बात वही सारी है।
कुचल कुचालियो को जग मे बता दो अम्ब !,
सारी शक्तियो से एक मातृ शक्ति भारी है॥

(17)

दुष्ट था दुशासन जो द्रोपदी का खीचा चीर,
आज के दुशासन शरीर खींच लेते है।
दूर कर देते क्रूर मातृ ममता से कही,
दुध मुहे बच्चो के भी क्षीर खींच लेते हैं॥
मूलहीन बाद को बढाके बात-बात ही में,
शीश काटने को शमशीर खीच लेते है।
अब है ब्यथा की कथा अकथ अपार अम्ब !,
राह राहियो को राहगीर खीच लेते है॥

(18)

हारे देव देवी शास्त्र सेवी शस्त्र सेवियो से
अस्त्र के प्रयोग से विकपित जहान है।
भूले सब ज्ञान ध्यान भगवान का भी नही
सद औ असद की न होती पहचान है॥
अर्थ-स्वार्थ अध मद मोह लोभ काम अध,
अधो का विधान ही समाज का प्रधान है।
सब बद राह सदराह सूझती है नही,
विकट घडी है छाया सकट महान है॥

(19)

बन्धु बन्धु मे भी प्रेम भाव का प्रभाव नही,
आपसी लडाई छिडी घर-घर आज है।
अल्प लाभ लोभ मे ही तोड देते नाते सभी,
किचित परार्थ परमार्थ का न काज है॥
एक दूसरे की है विभूति देख पाते नही,
द्वेस ईरषा से भरा सकल समाज है।
समय की पुकार है पधारो जगदम्ब । शीघ्र,
अब मातृ भक्तो की बचानी तुम्हे लाज है॥

(20)

तू ही चेतना का मत्र फूँकती अचेतन मे,
तू ही ज्ञानवान को अजान कर देती हो।
तू ही एक रक को बनाती नृप तुल्य कभी,
राजमहलो का अवसान कर देती हो॥
धूल फॉकते को फूल माला से सजाती तू ही
विविध सुखो का सुविधान कर देती हो।
एक पल कल्प के समान करती हो अम्ब ।,
क्षण को ही कल्प से महान कर देती हो॥

(21)

सकल धरा पै अविवेकतम छाया घोर,
ज्योति पुँज विद्युत विवेक विखरा दो माँ।
भटक रहे है भक्त सज्जन निराश्रित से,
है जो बदराह उन्हे राह से लगा दो माँ।।
लूटी जा रही है लाज सतत कुमारियो की,
इन असुरो को मातृ शक्ति दिखला दो माँ।
विविध विधाओ से विपन्न स्वत्व-तत्व हीन,
धर्म की धरा पै धर्म केतु फहरा दो माँ।।

(22)

देवी देवताओ का विरोध हो रहा है घोर,
अड्डा हिसको का हर पुण्य धाम होता है।
दुर्जन दुरूह अपराध करते है किन्तु,
अपराधियो मे सज्जनो का नाम होता है।।
सुख शान्ति से तो एक याम बीतता है नही,
धाम धार्मिको के सदा कुहराम होता है।
अत है अनीति अनाचार अत्याचार का जो,
पास मन्दिरो के गो कसी का काम होता है।।

(23)

धारिणी अनेक रूप भव भय हारिणी तू,
असुर संहारिणी अनन्त बलवाली हो।
भक्त बत्सला हो भक्त चितन तुम्हारा करे,
हुई क्यो अचेत जो असीम चेत वाली-हो॥
बाढी जा रही है भीर भारी कुटिलो की नित्य,
छिपी तू कहॉ पै हे कराल रूप काली हो।
सुर सिद्ध चिन्तित पुकारते "द्विजेन्दु" तू ही,
आह भरे जीव को पनाह देने वाली हो॥

(24)

जब-जब दानवी प्रसार बढ़ जाता अम्ब !,
आदि शक्ति तेरे नाम का पुकार होता है।
दैत्य कुल कर अशेष हरती धरा का भार,
दूर देवताओ का दु ख अपार होता है॥
क्षार दुष्कर्म होते सत्कर्म पाते प्यार,
नाश नैराष्य घोर अधकार होता है॥
दर-दर तुम्हारा यशगान गूँजता है दिव्य,
घर-घर आरती का उपचार होता है॥

(25)

जानती हुई भी अनजान क्यो बनी हो अम्ब !,
जब हर दिल मे तुम्हारा दिव्य डेरा है।
जन की दशा को देख करुणा न आती तुम्हे,
दु.ख भरी शाम, होता दु ख का सबेरा है॥
शान्ति के सदन मे अशाति की है आँधी चली,
घर-घर अपघातियो का घोर घेरा है।
समझ न पाता त्राण दात्रि जग माता अब,
बदला स्वभाव बदला कि प्रण तेरा है॥

(26)

सहन न होता क्रूर कर्म दुष्कर्मियो का,
बहन न अम्ब ! ताप दाप भार होता है।
लोक हुआ कपित विकम्पित असीम ब्योम,
सीमा पार ऐसा यहाँ अनाचार होता है॥
धावा चारो ओर से विधर्मियो का हो रहा है,
धर्म पर वार सदा दुर्निवार होता है।
आगम निगम औ पुराण को न माने कोई,
राम कृष्ण नाम का भी तिरस्कार होता है।

(27)

होत है अँदेश कौन कारन विशेष दया,
दीन पै न लेस ध्यान देति हो निमेष को।
कुटिल कुनीति पीर करति अधीर अब,
थकित शरीर जाय पूजै किस भेष को॥
छोडि सब द्वार एक चरण अधार मानि,
करत पुकार क्यो न हरति कलेश को।
जानि कै "द्विजेन्दु" दशा अब अविलम्ब अम्ब!,
देहि अवलम्ब निज बल लव लेस को॥

(28)

पाप के निवास हम पाप नाशिनी हो तुम,
त्रासिनी असत की सुसत की सहेती हो।
भक्षिका दनुज कुल देव रक्षिका सदैव,
पक्षिका सुनीति की दुनीति की दहेती हो॥
मुझसा अकिचन कुपूत है न कोई और,
तुमसी सुमात मातु सुतहि न चेती हो।
आरत "द्विजेन्दु" खडा आरति हरणि द्वार,
भार अब दु ख का उतार क्यो न देती हो॥

(29)

मारने को महिष असुर महाकाली बनीं,
चण्डी हुई चण्ड मुण्ड का विनाश हो गया।
शुम्भ औ निशुम्भ के निशान का निशान नही,
रक्त बीज जैसे राक्षसो का नाश हो गया॥
पीडा मिटी सुरो की पडाव असुरो का मिटा,
आज कहॉ बल का तुम्हारे ह्रास हो गया।
लाज है "द्विजेन्दु" आचरज की है बात अम्ब!,
देखते तुम्हे दु खी तुम्हारा दास हो गया॥

(30)

श्रृष्टि कारिणी अनिष्ट की निवारिणी हो देबि,
दृष्टि - दोष हारिणी अभीष्ट देन वारी हो।
तारिणी अगम की उद्धारिणी अधम की त्यो
विध्न नासिनी "द्विजेन्दु" देव हितकारी हो॥
धारिणी जगत की सॅभारिणी समस्त की हो,
दारिणी दरिद्र दु·ख आर्द चित्त वारी हो।
तोष होय जासो ताहि देति हो अनन्त कोष,
रोष होय जापै ताको करति भिखारी हो॥

(31)
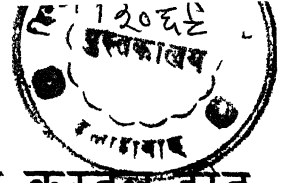
सेवत सुलभ चारि फल करतल होत,
मरुथल हूँ मे सुधा-धार बहि जाति है।
ऋद्धि सिद्धि होति जग परम प्रसिद्धि होति,
सुख सम्पदा मे वृद्धि होति दिन राति है॥
विद्या रमा-रम्यता लसै "द्विजेन्दु" अग-अग,
सग-सग लागी फिरे सुयश जमाति है।
काल को न डेरा औ दुकाल को न फेरा होत,
आवति नगीच नीच मीच सकुचाति है॥

(32)

निपट निराश हूँ किसी का विसवास कौन,
छोड दिये साथ जिन्हे हाथ से सवॉरा है।
माता-पिता बधु का मिला न सहयोग सही,
जाने न विधाता किस योग में उतारा है॥
कर्म औ विकर्म का विवेक जगती मे नही,
स्वजन-स्वगोतियों का स्वार्थ बडा न्यारा है।
हारा हर ओर से "द्विजेन्दु" और चारा नही,
एक जगदम्ब । तेरे नाम का सहारा है॥

(33)

शक्ति दे अशक्त को सशक्त करती हो अम्ब!,
दु.खित "द्विजेन्दु" पै दया न रच आई है।
बार-बार बार-बार टेरत ही बीत जात,
एक बार भी पड़ी आवाज न सुनाई है॥
ऐसी निठुराई कैसे उर मे समाई सुत,
देख असहाई जाकी पीर अधिकाई है।
वेद औ पुराण मे प्रगट महिमा है सदा,
भक्त की पुकार पै उदार होति आई है॥

(34)

घोर अधकार अनाचार का बढा है यहाँ,
सत के समाज पै असंत की चढाई है।
हिंसा लूट-पाट अबला से बलात्कार होत,
अत न अनीति की कुरीति की कमाई है॥
नीति प्रतिपालक के घालक घनेरे घूमै,
झूमते शराबियों की भीड़ चहुँघाई है।
भले की न चाह सदराह पै चले न कोई,
बिकट विनाश के घड़ी की छाप छाई है॥

(35)

पाले जात पापी निर्पराध आज मारे जात,
कुटिल समाज काज अति दु खदायी है।
थोडे द्रव्य लोभ मे है देवियाँ जलाई जाती,
घर-घर मे कराह पडती सुनाई है ॥
माताहीन शिशु कही शिशुहीन माता बनी,
पति से विहीन पत्नी की चीख छाई है।
दर-दर दानवी कुकृत्य दिन-दिन होत,
अधम अपार है अपार अधमाई है ॥

(36)

तेरी दासियो के अम्ब अम्बर हरण होते,
हरण कुमारियो की अति अधिकाई है।
अनुराग हीन जो सुहाग से विहीन हुई,
विधवा विलाप की करुण धुनि छाई है॥
धर्म प्राण देश मे अधर्म की बढी है बाढ,
गाढ दिन-रात बीतने मे कठिनाई है।
भूली हो त्रिशुली कहाँ शूल की हरणवारी,
चाहती कृपा की दृष्टि श्रृष्टि असहाई है॥

(37)

चन्द की अमन्द ज्योति मृदु शीतलाई तुम्ही,
भानु मे स्वतेज का प्रकाश भरती हो तुम।
नखत तुम्हारे नख ज्योति के प्रसार पुज,
अखिल ब्रह्माण्ड मे निवास करती हो तुम॥
मेघ बरसाते है तुम्हारी करूणा के बूॅद,
पाती विभा बिज्जु जब हास करती हो तुम।
सारी श्रृष्टि तेरी एक दृष्टि की कृपा "द्विजेन्दु",
अम्ब ! हर अश मे बिलाश करती हो तुम॥

(38)

धसकि धरा न जाय पाप-भार से है लदी,
श्रृष्टि तो तुम्हारी कहो कैसे बच पायेगी।
आकुल समस्त जीव देखते तुम्हारी राह,
कैसे आततायियों की रीति सही जायेगी॥
बार-बार संत द्विज-देव धेनु हेतु आई,
अब कहो अम्ब ! कौन कैसी घड़ी आयेगी।
बल पर तुम्हारे भक्त सबल बनेगे कभी,
दानवी कुकृत्य से पनाह मिल पायेगी।

(39)

मगल की मूल औ विनासिका त्रिशूल की हो,
सर्व अर्थ साधिका सुभक्त जन केरी तू।
फिर न पडा वो जग जाल के जवाल बीच,
एक बार जिस पै कृपा की दृष्टि फेरी तू॥
जन-जन की हो कल्याण दायिनी "द्विजेन्दु",
सत की सुत्राण औ असत की अहेरी तू।
दर-दर करुण पुकार है अपार महा,
मूर्ति करुणा की आज कहाॅ करी देरी तू॥

(40)

धर्म पर घात अपघात धर्म सेवियो पै,
कठिन कुकर्म से अधीर धरा सारी है।
बाल-तिय बध गोत-गोत से संहारे जात,
कठ पर गाय के छुरी है औ कटारी है॥
ग्राम-ग्राम नगर-नगर आहि आहि मची,
धाम-धाम जग यातना से पीर भारी है।
राह देखते है बेटे बेटियाॅ लगाये आस,
आओ या न आओ अम्ब। मरजी तुम्हारी है॥

(41)

लपट लुटेरे धन-धाम के धनी है बने,
सत-द्विज दीन-हीन राह के भिखारी है।
वर्ण-वर्ण द्वेषयुत बचक विविध भेष,
रच है न ज्ञान मान मच अधिकारी है॥
वेद-शास्त्र निदक विनिदक सुरो कें घोर,
आसुरी प्रवृत्ति है अघोर के पुजारी है।
सकट-विकट दुर्गति दिन दूनी होति,
घडियॉ देबि दुर्गा हुई दु·ख की हमारी है॥

(42)

शकर विरचि विष्णु ध्यान करते हैं सदा,
सुर नर मुनि श्रुति शास्त्र गुन गाते है।
महिमा अपार है न पार मिल पाया कभी,
पार ब्रह्म तेरे अक मे अधार पाते है॥
श्रृष्टि तुम में है तुम श्रृष्टि मे समाई अम्ब!,
श्रृजन सॅहार दृग खेल कहे जाते हैं।
पार कौन पाया योग माया तेरी माया देख,
और की क्या बात माया पति भूल जाते हैं॥

(43)

दुखित समाज मे मची है त्राहि-त्राहि अम्ब !,
पाहि-पाहि जन की पुकार छिति छाई है।
मारे जात सत-क्रूर कुटिल सॅवारे जात,
शरण न कोई दशा घोर असहाई है॥
आई हो समेत शक्तियो के साथ बार-बार,
दुष्ट दानवो की जब शक्ति अधिकाई है।
जन्म की है कर्म की है तप की तुम्हारी भूमि,
तापै नित्य होत घोर पाप दु खदाई है॥

(44)

अग जग तेरी महामाया का प्रसार अम्ब !,
तेरी शक्ति से ही विधि श्रृष्टि रच पाते है।
तेरा बल पाके विष्णु पालते समस्त को है,
शकर सहार की कला तुम्ही से पाते है॥
कण-कण चेत औ अचेत मे तुम्ही हो व्याप्त,
भेद तेरी सत्ता का न वेद जान पाते है।
अण्डकोष कानन समेत गिरि सागर भी,
उद्‌भूत तुमसे तुम्ही मे समा जाते है॥

(45)

महावात तेरी एक सॉस का स्वरूप अम्ब।,
तेरे मजु हास से विकास फूल पाते है।
तेरे स्वर का ही घोर गर्जन पयोद मे है,
तेरे नैन कोर ही प्रलय का गीत गाते है॥
तेरे रच तेज की प्रभा है सूर्य चन्द्र मे भी,
तेर अश के ही ये नक्षत्र कहे जाते है।
सारी विश्व सत्ता मे महत्ता है तुम्हारी दिव्य,
यत्र तत्र देबि सरवत्र तुम्हे पाते है॥

(46)

तेरे नेत्र तेज का प्रभाव अग्नि देव मे है,
तेरे बाहुबल से हवा ने वेग पाया है।
तेरे पद नख की करालता कराल घोर,
अश जिसका ही इन्द्र बज्र मे समाया है॥
तेरे बात रस की, सुधा को माधुरी है मिली,
तेरी प्रतिमूर्ति ही सुरागना की काया है।
तेरी एक हूक मे असख्य कढ जाते लूक,
महा ज्वाल जाल एक फूँक ही की माया है॥

(47)

सेवा तेरी ही सेवकाई चाहता हूँ अम्ब !,
सद्भाव का ही उर भाव भव्य भर दे।
मान अपमान सुख दु:ख मे समान रहूँ,
द्रोह लोभ का भी कर दूर तू असर-दे॥
ध्यान गुन ग्यान के विधान का न ज्ञान कुछ,
निपट अजान की कुबुद्धि दूर कर दे,
तेरे पद पद्म में सदैव अनुरक्ति रहे,
भक्ति रहे तेरी आदि शक्ति यही वर दे॥

(48)

चाहे जिसे अजर अमर तू बना दे यहाँ,
चाहे जिसे क्षण मे धरा से दूर कर दे।
देखते ही रंक को बना दे लोकपति और,
एक सम्राट को विभव विहीन कर दे॥
चाहे तुच्छ कण को पहाड़ का स्वरूप दे दे,
तुग धरा धर को भी कण मे बदल दे।
तृण तृण मे है तेरी सत्ता सदैव व्याप्त,
कर दे विनाश या विकास विश्व भर दे॥

(49)

एक-एक पल तेरे बल से बिताया यहाँ,
तेरी भक्ति से ही तो विरोधियो को मारा है।
जब-जब दु ख के दुरूह दल दलो मे फँसा,
देखा एक मात्र मिला तेरा ही सहारा है॥
होश जब आती बिते दिन की कहानी कभी,
सोचता हूँ नाता जागती का व्यर्थ सारा है।
दोष दूर करके सतोष जन को दे मातु,
कोष से क्या काम मिला पोष जो तुम्हारा है॥

(50)

जय देन वारी हो पराजय तुम्हारी देन,
अभय बनाती भक्त भीरु भय हारी तू।
देती हो सुयश अपयश भी तुम्हारे हाथ,
मगल की रूप लोक मगलाधिकारी तू॥
हर अविवेक देती विमल विवेक शुद्ध,
टार देती विषय विकार अविकारी तू।
भेद नही राजा रक एक रूप तेरे अक,
छोटे बडे सबकी समान महतारी तू॥

(51)

भौतिक विविध आधि व्याधि से घिरा हूँ अम्ब !,
मेरे तन ताप का निवारन न होगा क्या।
मॉ से बडी करुणा "द्विजेन्दु" सुत हेतु किसे,
शूल का त्रिशूल से सॅभारन न होगा क्या॥
अघ के पयोधि की है उठती हीलोर घोर,
बोरी चहै तुमसे उबारन न होगा क्या।
सत की सॅघाती सतघाती भये चारो ओर,
तेरे हाथ इनका विदारन न होगा क्या॥

(52)

अम्ब के समान अग जग पालिका है अम्ब !,
कालिका कराल काल गति तू अबाधा है।
दुरित "द्विजेन्दु" भूरि छन मे करति दूरि,
पूरी करै कामना मिटाय देति बाधा है॥
अष्ट सिद्धि सुख नव निधि की प्रदाता तू ही,
सिद्ध हो गया जो साधनो से तुम्हे साधा है।
वदन करत अज शकर समेत विष्णु,
तू ही ब्रह्म कृष्ण की अजेय शक्ति राधा है॥

(53)

जापै कृपा दृष्टि सृष्टि सारी अनुकूल ताके,
त्राण हर ठौर वही प्रति प्राण प्यारा हो।
छाया एक बार मिले तेरी योग माया जिसे,
माया मुक्त ज्योति युक्त जग का सितारा हो॥
अवघट घाट वाट दुर्गम सुगम होत,
जाके उर तेरे भक्ति भाव का सहारा हो।
भोग भुक्ति योग युक्ति मुक्ति का सुयोग मिले,
वृद्धि हो विभव की दूर भव रोग सारा हो॥

(54)

चाहता नही हूँ अम्ब! विभव विलास मिले,
विविध विकास का न साधन हमारा हो।
पर उपकार मे लगा दूँ शक्ति सारी यहाँ,
बोझ से दबा जो उसे हाथ का सहारा हो॥
नेह देह गेह धन धाम की न चाह, चाँहू,
आठो याम एक तेरे नाम का उचारा हो।
दूषण समस्त अग भूषण बने "द्विजेन्दु",
यदि एक बार देवि दर्शन तुम्हारा हो॥

(55)

कैसे रहे काहू विधि रहनि हमारी अब,
दु ख की दुरूहता अधीर कर देती है।
हार गया करके उपाय उर पीर मेरी,
विफल समस्त तदवीर कर देती है॥
रुकती न क्यो हूँ कभी कसक कराह घोर,
साँस की जो साँसति गँभीर कर देती है।
दुर्गा "द्विजेन्दु" की सहाय आय होती क्यो न,
काढि दु ख सिधु से सुतीर कर देती है॥

(56)

कध मृगपति के सवार कर-बाल कर,
विद्युत प्रवाह की प्रकाश पुज वारी हो।
महिमा अनत शेष निगम न पावैं पार,
काल सी भयकर विशेष भेष धारी हो॥
चन्द्रमा ललाट बक भृकुटि त्रिनेत्र युत,
आकृति विकट दुष्ट दभ मान हारी हो।
शक्ति हो अपार, तेरी भक्ति मिल जाये जिसे,
सेवक वही हो कृपा जिस पर तुम्हारी हो॥

(57)

ध्यान मे तुम्हारा रूप रम्य रसना पै नाम,
काम एक तेरा अम्ब गुन गान गाऊँ मै।
बानी मे तुम्हारे यश गाथा की कहानी रहे,
सेवा मे शरीर मन प्रान को लगाऊँ मै॥
लगन निरन्तर "द्विजेन्दु" चरणो मे रहे,
शरण तुम्हारी छोड अनत न जाऊँ मै।
योग युक्ति हीन सब साधन विहीन एक,
याचना हमारी है तुम्हारी भक्ति पाऊँ मै॥

(58)

बाढ़े ब्याभिचारी अनाचारी कुविचारी क्रूर,
घर-घर वाट-वाट हिसा होति भारी है।
भाई का न भाई पिता पुत्र मे लडाई घोर,
पर प्रेम पतिहि सँहारि देति नारी है॥
लूटे सतियो की लाज सम्पति लुटेरे नित्य,
गति मानवो की दानवो से हुई न्यारी है।
भूखे फिरैं संत औ लुटेरे लूटते है धन,
घूमैं बाल हारी कहाँ करुणा तुम्हारी है॥

(59)

सज़ा गई उलट अधर्म-धर्म माने जात,
कठिन कुकर्म ही सुकर्म कहे जाते है।
पाप जानते थे सोई पूण्य है सराहे जात,
दान को न मान देव पूजा नही पाते-है॥
अतिथि "द्विजेन्दु" दर-दर दुतकारे जात,
लम्पट जुआरी चोर क्षीर-खीर खाते है।
ऑधी स्वार्थ अर्थ की अनर्थ की भयानक है,
धधे नीचता के सभी अधे बने जाते है॥

(60)

पाठ जो करेगे इस दुर्गा शतक का तो,
तिनके गले के परे फन्द कट जायेगे।
दूर दुर्गति यश गति पाइहै "द्विजेन्दु",
जन्म जन्मान्तर के पाप छॅट जायेगे॥
लोक सुख भोगि पर लोक अधिकारी होगे,
अजश-अनय के कूप-कुण्ड पट जायेगे।
देखते गिरेगे पैर दस्यु आततायी वृन्द,
हिसक बिलोक सामने से हट जायेगे॥

(61)

नाम है अनत तेरी महिमा अनत अम्ब !,
पाप के पयोधि रहा डूब देश सारा है।
बचक के भेष घूमै घर-घर प्रपची यहाँ,
त्राण धन धाम का न प्रान का सहारा है॥
भीति छिति ब्योम मानवो की रही बात कौन,
सुर का असुर से बचाव का न चारा है।
आरत "द्विजेन्दु" है पुकारत अधीर सभी,
गारत है होत देवि ! भारत तुम्हारा है॥

(62)

मरयाद महिमा न माने देव देवियो की,
जप तप ब्रत पै विवाद गढे जाते है।
वेद शास्त्र मुनि त्रिशियो के उपहासी त्रासी,
यज्ञ नासी असुर सुबाहु बढे जाते है॥
ताडे जात त्यागी तपी सदग्रन्थ फाडे जात,
राम कृष्ण चित्र मन्दिरो से कढे जाते है।
गीता ग्रन्थ साहब कुरान की न माने बात,
काम क्रोध लोभ ही के पाठ पढ़े जाते है॥

(63)

एक मे अनेक तू है आदि अंत हीन अम्ब !,
दृष्टि से अलक्ष हर श्रृष्टि मे समाई है।
अन्नपूर्णा के रूप विश्व पालती है तू ही,
काल से भी कठिन कराल गति पाई है॥
दुर्गा तुम्हारी पर तर है न कोई शक्ति,
भक्त हेतु तेरे अवतार की बड़ाई है।
भक्ति दे "द्विजेन्दु" चरणो मे अनुरक्ति यही,
वर दे सदा जो वरदान देति आई है॥

(64)

भूमि है वशिष्ठ विश्वामित्र ऋषि गौतम की,
जिनके विज्ञान गुन ज्ञान की कहानी है।
आये जहॉ राम कृष्ण कपिल परशुराम,
जिनकी महत्ता महा प्राप्त प्रति बानी है॥
ब्याप्त दुर्गा का नव रूप तीन लोक बीच,
छाया मे समस्त जग माया की निशानी है।
आज वह देश भरा नीच औ नराधमो से,
ताप की न भीति पाप होत मनमानी है॥

(65)

भक्त हैं तुम्हारे असहाय से विचारे सब,
देख दशा उनकी उदास मन होता है।
आई दुर्गा थी यहाँ असुर सहारने को,
सोचता सदा हूँ विसवास नहीं होता है॥
परिध त्रिशूल खड्ग खप्पर तुम्हारे हाथ,
बाधा कौन? सोच के हताश जन होता है।
रोती द्रोपदी है प्रह्लाद खभ बाँधे जात,
भूली कहाँ आने का प्रयास क्यो न होता है॥

(66)

कौन गुन गाथ पर कैसे रीझती हो अम्ब।
त्वरित पसीजती हो कौन सी पुकार पर।
हेतु होत कैसा जापै भक्त हेतु आती दौर,
डूबते को सिन्धु से निकालती करार पर॥
दयामयी देती हो दया की भीख कैसे कही,
अध आँख पाता पगु चढ़ता पहार पर।
पाप श्रापहारी त्रय ताप की समन वारी,
आया सुन सुयश "द्विजेन्दु" तेरे द्वार पर॥

(67)

एक नख रेख की प्रभा है नखतावली मे,
रच मृदु हास का प्रकाश सोम पाता है।
कोटि-कोटि सूर्य की विभा है लसी अग-अग,
अश मात्र से ही अधकार नाश पाता है॥
शेष शीश अण्डकोष कानन समेत गिरि,
तेरा शक्ति बिन्दु महा सिन्धु बन जाता है।
श्रृष्टि की चमक तेरी दृष्टि की दमक अम्ब !,
तु जो हुई इष्ट तो अभीष्ट मिल जाता है॥

(68)

एक दृष्टि मे है भरी श्रृष्टि की सृजन शक्ति,
दृष्टि दूसरी मे छिपा प्रलय विधान है।
एक श्वॉस का है यह पवन प्रसार महा,
सत्ता एक अंश का महान आसमान है॥
तेरे पद तल के एक अश का धरातल है।
ऑचल अमल भुक्ति मुक्ति का निधान है।
ठौर कौन ऐसा जहॉ जाऊँ मॉ तुम्हारे लिये,
देखता जहॉ हूॅ वहॉ तू ही गतिमान है॥

(69)

डूब रहा जग के अपार परावार बीच,
खोजता न कोई कही मिलता सहारा है।
जल जन्तु मन कामनाओ को दबाते कही,
ब्यसन तरगों का उछाल बडा न्यारा है॥
अगम अथाह पोत बेड़ा है न नाव यहाँ,
चारों ओर देखता न दीखता किनारा है।
पार कर अब न अबार कर मेरी अम्ब !,
तू है महा शक्ति एक आसरा तुम्हारा है॥

(70)

ऑणवीय अस्त्र निर्माण प्राणघाती नित,
श्रृष्टि के विनाश का प्रयास यहाँ होता है।
दानवीय कृत्य का प्रसार नभ भूतल मे,
अपने पराये का न भास यहाँ होता है॥
बास है न कोई जहाँ शान्ति औ सुरक्षा मिले,
ठाम-ठाम मृत्यु का निवास यहाँ होता है।
धर्म के थलो पै होति हिंसा हिंसकों के मुख,
देवी देवता का उपहास यहाँ होता है॥

(71)

जीवन सुरक्षा की तो आशा है दुरासा मात्र,
रक्षा का विफल सब काज आज हो रहा।
ऐसी घरी आई घर-घर आततायी घूमै,
चेतना विहीन सा समाज आज हो रहा॥
यत्न लग पाया न प्रत्यन मिल पाया कोई,
विकृत स्वरूप का स्वराज आज हो रहा।
आओ वेगि वैष्णावी । बचााओ विश्व सागर मे,
शान्ति का तिरोहित जहाज आज हो रहा॥

(72)

बोल रहा कण्ठ-कण्ठ तेरे स्वर जगदम्ब !,
वृक्ष पै तुम्हारी कृपा डोल रहा पत्ता है।
निरजन नगर वन सिंधु मरुथल बीच,
व्याप्त कन-कन में तुम्हारी एक सत्ता है॥
राग अनुराग औ विराग में विराजमान,
ज्ञान, ध्यान विमल विवेक की प्रदत्ता है।
सृजन भरन भार हरनि "द्विजेन्दु" तू ही,
ब्रह्म विष्णु शकर की शक्ति है महत्ता है॥

(73)

भारतीय गौ रव गुरूत्व फैल जाये जग,
घर-घर शक्ति का प्रसार चाहता हूॅ मै।
रम्य रमणीयता रमा की वीणा वादिनी के,
वीणा की मधुर झनकार चाहता हूॅ मै॥
गूॅजै ग्राम-ग्राम मे ऋचाये वेद की "द्विजेन्दु",
ज्ञान पै अमोघ अधिकार चाहता हूॅ मै।
अगम-अपार पारावार पार पाने हेतु,
माता के कृपा की पतवार चाहता हूॅ मै॥

(74)

निहित पयोधि नद नारे दृग बिन्दु में है,
तन श्रम कण सभी नभ के सितारे है।
तारे है असख्य अधमों को गुनगान तेरे,
मेरे अघ ओघ जो अमोघ है अपारे है॥
पारे व्याधि विविधि न क्षण भर न्यारे होत,
त्राण की न राह मिलती है प्राण हारे है।
हारे हर जतन हताश हो "द्विजेन्दु" दु.खी,
अम्ब। दिन रात पथ देखते तुम्हारे है॥

(75)

तेरे रूप नाम की है महिमा महान मैया,
दुर्गा का सुनाम सब दुरगति हारी है।
पुत्रवत प्रेम हर जीव पै तुम्हारी दया,
भक्त पर भीर अबला पै बला भारी है॥
बानी-बानी विरुद कहानी का प्रसार यहाँ,
ग्राम प्रति धाम पूजा अर्चना तुम्हारी है।
भूली कहाँ शूल खड्ग खप्पर तुम्हारे हाथ,
आती क्यो न अम्ब ! काँपती सी भूमि सारी है॥

(76)

विषम विषय के चक्रवात मे पडा हूँ अम्ब !,
सूझता नही है कुछ अधकार छाया है।
झूलता झकोरो मे सहारा मिलता है नही,
ज्योति सब क्षीण शक्ति हीन हुई काया है॥
प्रिय जन साथी सब स्वार्थ के सहाती रहे,
आते अब याद है कुकर्म जो कमाया है।
बार-बार करत पुकार ले उबार झट,
तू है महाशक्ति और तेरी महामाया है॥

(77)

अश जो तुम्हारी दिव्य देवियॉ न पाती त्राण,
विकराल दानव दहेज प्राण लेता है।
लम्पट लुटेरे लूटते हैं सतियो की लाज,
चीख चीत्कार पै न कोई ध्यान देता है॥
विकट समस्या है न कोई समाधान मिले,
शक्ति हीन सज्जन है लम्पट विजेता है।
बाढ़े बहु असुर "द्विजेन्दु" सुर गाढ़े आज,
मान है नराधमों का चेतन अचेता है॥

(78)

ध्यान भक्ति से ही दुःख सुख मे बदल जाता,
भक्षक का रक्षक स्वभाव बन जाता है।
दस्यु दल डेरे बनें चेरे उसके जो सदा,
प्रेम भक्ति से "द्विजेन्दु" मॉ का गुन गाता है॥
विधि की कुरेख भी सुरेख बन जाती भाल,
दुरित दुकाल भय भूल के न आता है।
जाके उर बसत कराल कालिका का रूप,
सामने बिलोक उसे काल भाग जाता है॥

(79)

गिनती नही है रक्त बीज मधु कैटभ की,
शुम्भ औ निशुम्भ की धरा पै भीर भारी है।
शोषक ये रक्त चूसते निरीह मानवो के,
दानवी कुकृत्य घोर अविराम जारी है॥
अनयी समाज मे दुशासन बने है सभी,
लाज बचा पाती नही द्रोपदी बिचारी है।
कोर करुणा से एक बार लो निहार अम्ब!,
दुष्ट दल दलनि तुम्हारी शक्ति न्यारी है॥

(80)

भक्ति भी न आई चरणों मे अनुरक्ति कभी,
मोह के निशा मे पडा जीवन बिताया है।
लोभ लालसा की लगी लगन लगी ही रही,
मन ते गई न क्रूर कामना की छाया है॥
क्षीण अग अग भये शिथिल तरङ्ग सब,
छूटे रंच माया न प्रपच सनी काया है।
दीन हीन अबुध "द्विजेन्दु" सुत जाये कहाँ,
ठौर ठौर दौरि माँ तुम्हारी पौरि आया है॥

(81)

अन्न जल दाता अन्नपूर्णा तुम्हारा रूप,
बन में विजन मे असन तुम देती हो।
पूर्ण करती हो जन जन के मनोरथ को,
हर एक तन को वतन तुम देती हो।।
समता "द्विजेन्दु" मातु तेरी ममता का नही,
डूबते को त्राण का जतन तुम देती हो।
शक्ति भर देती हो अशक्त प्राणियो मे अम्ब!,
अवलम्बहीन को शरण तुम देती हो॥

(82)

यंत्र तंत्र मंत्र में तुम्हारी व्याप्त महामाया,
साया में तुम्हारी रही बोल हर काया है।
दृष्य में अदृश्य मे सहाया श्रृष्टि की हो तुम्ही,
छाया में समस्त सचराचर समाया है॥
भूत वर्तमान औ भविष्य की प्रणेता अम्ब !,
ज्ञाता पल पल की तुम्हे वेद ने बताया है।
लोक परलोक हरलोक हेतु ज्ञान यहाँ,
वही जान पायेगा जो तुम्हें जान पाया है॥

(83)

गति से तुम्हारी गतिमान विश्व होता यह,
ज्योति से गगन पूर्ण भासमान होता है।
युक्ति से तुम्हारी पिण्ड प्राण वान होते सभी,
ज्ञान से तुम्हारे जीव ज्ञानवान होता_है॥
चचल अचल होते अचल चलायमान,
अणु परमाणु मे तुम्हारा ज्ञान होता है।
अग जग दौडता तुम्हारी करुणा से अम्ब !,
बोलियो मे स्वर का तुम्हारे भान होता है॥

(84)

ज्योति जगती है कन कन मे तुम्हारी दिव्य,
प्रकृति समस्त तो तुम्हारी एक छाया है।
कभी हो विखेरती समेटती कभी हो इसे,
देवि तुमने ही इस विश्व को रचाया है॥
सुगति कुगति साथ हाथ मे तुम्हारे सदा,
बॉटती हो स्वेच्छया सुबेद ने बताया है।
हर काज होते है इशारे पै तुम्हारे अम्ब !,
माया का किसी ने पार अब तक न पाया है॥

(85)

माया में तुम्हारे मुग्ध ब्रह्म नाचता है जब,
रम्य राधिका के रूप रास रच देती हो।
रेत के कणो को रत्न राशि बना देती और,
सिंधु में भी सुखद निवास रच देती हो॥
एक दृष्टि में ही सारी श्रृष्टि को पसारती हो,
पल मे ही प्रलय प्रयास रच देती हो।
छाया मे तुम्हारे सब जीव पलते है अम्ब !,
प्रति जीव जीने का सुपास रच देती हो॥

(86)

हिंसक की भीर देव-दानव के तीर,
घोर संकट गॅभीर मे अधीर जन त्राता हो।
रन बन विकट विपथ दुर्जन हाथ,
दस्यु-दल घेरे मे पड़े की प्राण दाता हो॥
निपट मलीन सब साधन विहीन दीन,
ऐसे भाग्यहीन की सुभाग्य निरमाता हो।
अनल-प्रचण्ड जल-राशि राजदण्ड से भी,
मुक्ति दिलवाने में समर्थ तुम्ही माता हो॥

(87)

शुम्भ औ निशुम्भ चण्ड-मुण्ड रक्तबीज रूप,
असुर अनेक मचा उतपात भारी है।
घर मे गली मे वाट औघट घाट मे भी,
अस्त्र शस्त्र घात नित रक्त पात जारी है॥
नाम देवी देवता का लेना अपराध हुआ,
पूजा अर्चना सुबन्दना की बात न्यारी है।
भूली है त्रिशुली चक्रधारी तू कहाॅ पै सदा,
श्रृष्टि की सुरक्षा हेतु तूने तन धारी है॥

(88)

ऋद्धि सिद्धि भोग मुक्ति योग युक्ति दाता तू ही,
तू ही भक्ति शक्ति अनुरक्ति देन वारी हो।
तू ही हर व्यक्ति मे बसी हो अव्यक्त रूप,
तू ही त्रिगुणात्मा स्वरूप देह धारी हो॥
तू ही दिव्य चेतना स्वरूप हर जीव मे हो,
तुष्टि रूप तू ही पाप ताप दाप हारी हो।
तू ही ज्ञान ज्योति हो प्रकाशिनी परमतत्व,
तू ही माॅ अनन्त की महान अधिकारी हो॥

(89)

बीत रहा जीवन न अब तक सुधार पायी,
बिगडी हमारी कहो कब तक सुधारोगी।
माता और पुत्र की परीक्षा की घड़ी है यही,
मातृ ममता से सही हो के तुम्ही हारोगी॥
जग मे सुपुत्र तो तुम्हारे हैं अनेक किंतु,
एक है कुपुत्र क्या न इसको सॅवारोगी।
कठिन कुकर्म का "द्विजेन्दु" भारी लिए भार,
डूब रहा डूबने के बाद क्या उबारोगी॥

(90)

मगल करति द्रुत हरति अमंगल को,
पूरी सेवको की प्रति आस करती हो मॉ।
दिव्य हास देती हो उदास अधरो को कहीं,
ज्योति हीन ऑखो में प्रकाश भरती हो मॉ॥
नाम लेत जग के जवाल हट जाते सभी,
फन्द कट जाते जम त्रास हरती हो मॉ।
शक्ति कॉ तुम्हारे माप दण्ड क्या "द्विजेन्दु" जब,
सारी शक्तियों में तू निवास करती हो मॉ ॥

(91)

नाम के प्रताप पाप पुन्ज का विनास होत,
मत्र जाप से ही ताप दाप हर लेती हो।
कीर्ति के बखाने जग कीरति महान होति,
पार भव सागर अपार कर देती हो॥
कीन्हे गुन गान गुन धाम बना देती अम्ब !,
ध्यान से हृदय मे ज्योति जाल भर देती हो।
पॉव पै परत जन्म-जन्म के कटत कष्ट,
झोपड़ी के भक्त को सुवर्ण घर देती हो॥

(92)

साधन विहीन कौन साधना करुँ मै कैसे,
करुण स्वभाव से अभाव तू हटा दे मॉ।
अघ-अज्ञता के अंधकूप में पड़ा "द्विजेन्दु",
कोटि रवि मण्डित स्वरूप प्रकटा दे मॉ॥
धर्म शास्त्र विधि के विधान का न ज्ञान कुछ,
ध्यान अपना दे और सपना मिटा दे मॉ।
रूप कुशलात्मिका दिखा दे एक बार निज,
झेल रहा कठिन झमेले निपटा दे मॉ॥

(93)

दिव्य रूप राधा के मिटा दे देश बाधा सब,
कृष्ण रूप तू ही मजु बॉसुरी बजा दे मॉ।
द्रोह छल कपट का न भाव प्राणियो मे रहे,
दूर हो अशान्ति साज शान्ति का सजा दे मॉ ॥
फूँक दे अनेकता मे दिव्य एकता का मत्र,
सबके हृदय में सद्‌भाव उपजा दे मॉ।
उमा रमा बानी सी बनायें आचरण निज,
नारियों के रक्त में तू ऐसी ऊरजा दे मॉ ॥

(94)

वन्दना किये ते नर होत है जगत बन्द्य,
चन्दन चढ़ाये चन्द्रमा सा छवि पाता है।
अक्षत दिये ते राज छत्र अधिकारी होत,
धूप दीप दीन्हे दीप दीप यश छाता है ॥
भोग नैवेद्य का लगाये नित्य नेम से जो,
विविध प्रकार व्यंजनों का जोग आता है।
स्तुति "द्विजेन्दु" नित करै जो तुम्हारी अम्ब!,
लोक परलोक में अशोक बन जाता है ॥

(95)

'दु' के कहने से सब दुर्गति दूर होति,
सम्पति दे विपति महान टाल देती हो।
'र' से रण क्षेत्र मे हो विजयी बनाती अम्ब!,
पूरी कर कामना निहाल कर देती हो॥
'गा' कहे द्रोहियो पै गाज सी गिराती सदा,
शीष पर आये काल को भी टाल देती हो।
'मॉ' के कहे ममता की राशि सी उडेलती हो,
'ता' के कहे धनिक विशाल बना देती हो॥

(96)

हृदय सदा को निज मन्दिर बना लो अम्ब !,
मन से हमारे नित मनन तुम्हारा हो।
ऑखो में तुम्हारे दिव्य दर्शन की लालसा हो,
सिर से अनेक बार नमन तुम्हारा हो॥
हाथों को परस चरणों का मिलता ही रहे,
पूजा मे "द्विजेन्दु" लीन परिवार सारा हो।
पदो से सदा दिव्य धाम की परिक्रमा हो,
मुख से तुम्हारे एक नाम का उचारा हो॥

(97)

पूजा के किये ते जग विभव विलास मिले,
चरित कहत सुचरित ढाल देती हो।
मान होत गुन गान करत महान होत,
ध्यान किये दुःखद विधान टाल देती हो॥
जाप किये सबिधि "द्विजेन्दु" त्रै ताप हरो,
भाल खिचा विधि कुनिशान घाल देती हो।
पार कर देती भव सागर अपार अम्ब !,
चरन नमन से निहाल कर देती हो॥

(98)

कोष करुणा का सुत हेतु हो लुटाती सदा,
अम्ब ! इस रीति की प्रतीति तो मिटाओ ना।
भक्ति की न शक्ति न पदो में अनुरक्ति रच,
अबुध अशक्त मानि ममता घटाओ ना॥
श्रृष्टि का तुम्हारे एक अश अवलम्बहीन,
भटक रहा हूँ अब और भटकाओ ना।
माया बीच जीवन बिताया अब आया दौर,
दु खित "द्विजेन्दु" दीन द्वार से हटाओ ना॥

(99)

बस्तु कोई जग की अदेय न तुम्हारे लिए,
भक्त की सदिच्छा सदा पूर कर देती हो।
आधि ब्याधि विविध उपाधि उत्पात आदि,
ध्यान मात्र से ही सब दूर कर देती हो॥
चिंता रह जाती न अचित बन जाता भक्त,
धाम धन धान्य भर पूर कर देती हो।
मूल हो सजीवन की दूर करती हो दुःख,
आती आपदाये उन्हें चूर कर देती हो॥

(100)

बानी करो सफल हमारी वरदानी अम्ब !,
पाठ जो करै समस्त बाधा चूर कर दो।
विपति न आये सुख सम्पति सदा ही रहे,
हर वस्तुओं से घर भर पूर कर दो॥
गाये गीत मगल के मोद मय तुम्हारा भक्त,
मंगला सभी अमगलों को दूर कर दो।
दोष दु.ख मुक्त सर्वगुण सम्पन्न नित,
रहे न प्रतीक्षा प्रति इच्छा पूर कर दो॥

वन्दना न आती अर्चना मे असमर्थ अम्ब !,
पूजा का विधान क्या अजान कर पाऊँ मै।
नाम है अनन्त किस नाम से पुकारुँ तुम्हे,
रूप का न अन्त ध्यान किसका लगाऊँ मै।।
गाते गुन गान श्रुति शेष भी न पाते पार,
अबुध "द्विजेन्दु" कैसे विरुद गिनाऊँ मै।
नाता पुत्र माता का हमारा औ तुम्हारा यही,
आशा लिये अम्ब ! तेरे द्वार दौरि आऊँ मै।।